विषय - संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)

तृतीय वर्ष, षष्ठ पत्र

व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

(पूर्व से आगे) क्रमशः

भाषा की उत्पत्ति :-

(2) धातु सिद्धान्त :- भाषा की उत्पत्ति के विषय में धातु सिद्धान्त का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ऐसा माना जाता है कि यूरोप में सबसे पहले प्लेटो ने इस धारणा की ओर संकेत किया था, पर वे सैद्धान्तिक आकार न दे पाए। प्राध्यापक हेस और डॉ॰ स्टाइन्थाल ने इस सिद्धान्त को व्यवस्थित रूप दिया, हालाँकि ऐसा माना गया है कि हेस ने इस धारणा पर केवल भाषाओं में ही कहा था। प्रो॰ मैक्समूलर ने इस सिद्धान्त को रणनवाद (Ding Dong Theory) का नाम दिया और दार्शनिकों ने उसे नेटिविस्टिक थ्योरी (Nativistic Theory) के रूप में प्रस्तुत किया है।

इस सिद्धान्त के अनुसार प्रारम्भ में मनुष्य में एक ऐसी सहज प्रतिभा थी कि वह किसी धातु से उत्पन्न होने वाली ध्वनि को तुरन्त ग्रहण कर उसे सार्थक धातु के रूप में निहित कर लिया करता था और धीरे-धीरे इन्हीं धातुओं से भाषा की उत्पत्ति हुई। ऐसा माना गया है कि प्रत्येक धातु अथवा वस्तु चोट पड़ने पर एक विशेष प्रकार की ध्वनि को उत्पन्न करती है।

IND CamScanner App

प्रारम्भिक मानव ने अपनी अपूर्व सहज प्रतिभा के बल पर इन ध्वनियों को ग्रहण किया और अपनी उसी प्रतिभा के बल पर उसमें अर्थ का भी आधान किया। प्रारम्भ में इस प्रकार 400-500 सार्थक धातुएँ बन गई और इन्हीं धातुओं से भाषा बनी। बाद में आवश्यकता न होने के कारण मनुष्य में इस प्रकार की धातुओं की रचना करने की शक्ति भी समाप्त हो गई।

यद्यपि कुछ पृथक् रूप में ही सही, भारत में भी धातुओं से भाषा की उत्पत्ति का सिद्धान्त काफी समय तक प्रचलित रहा। शाकटायन ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। यास्क अपने निरुक्त में कहते हैं-

सर्वाणि नामान्याख्यातजानि इति शाकटायनः।

बाद में पतञ्जलि ने महाभाष्य में इस सिद्धान्त का वर्णन इस प्रकार किया-

नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम्। इस सिद्धान्त के विरुद्ध अनेक आपत्तियाँ उठाई गई हैं सबसे पहली आपत्ति यह की जाती है कि आदिम मानव में धातुओं से ध्वनियाँ ग्रहण करने तथा इन्हें अर्थ से युक्त कर लेने की क्षमता विद्यमान थी, इसका कोई बुद्धिसंगत प्रमाण सामने नहीं आता। दूसरी आपत्ति यह है कि केवल धातुओं से ही भाषा नहीं बन जाती, इसमें विकरण, प्रत्यय आदि भी आवश्यक होते हैं जिनके बारे में यह सिद्धान्त मौन है। फिर अब तो भाषाविदों ने शोध के आधार पर यह सिद्ध कर ही दिया

IND CamScanner App

है कि धातुओं और प्रत्ययों की कल्पना भाषा के विश्लेषणकर्ताओं ने बाद में की है। भर्तृहरि ने भी 'वाक्यपदीय' में पदों के धातु-प्रत्ययात्मक विश्लेषण को काल्पनिक और सुविधा के लिए आवश्यक माना है। सबसे बड़ी आपत्ति तो यह की जाती है कि संसार में अनेक भाषाएँ ऐसी हैं जिनमें धातु हैं ही नहीं- उनकी उत्पत्ति के बारे में इस सिद्धान्त में कुछ भी नहीं कहा गया है। इन सभी कारणों के आधार पर इस सिद्धान्त को सर्वमान्यता प्राप्त नहीं हुई है। इति।

IND CamScanner App